बिहार सरकार

कुक्कुट पालन

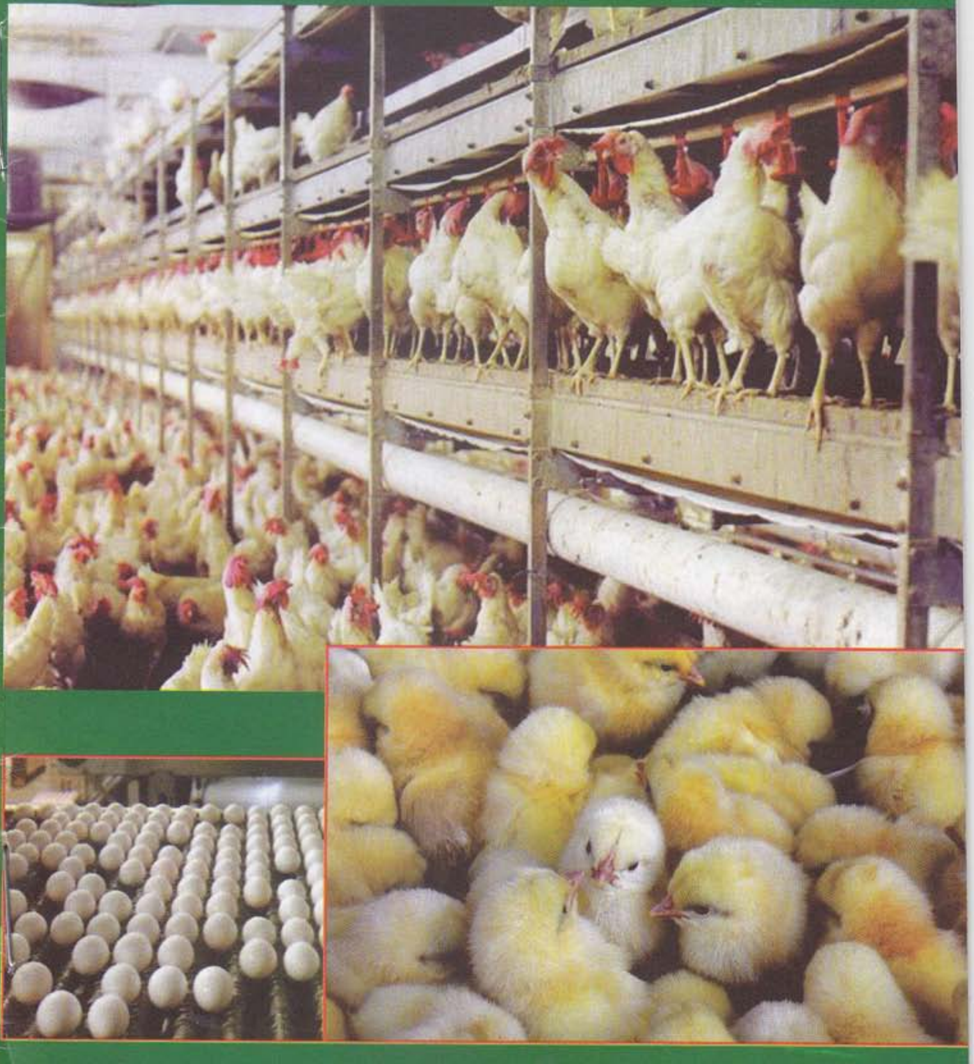

कुक्कुट पालन

मुर्गीपालन आज एक उद्योग के रूप में स्थापित हो चुका है तथा पिछले कुछ दशकों में ग्रामीण क्षेत्रों में भी यह व्यवसाय के रूप में अपनाया जाने लगा है। ग्रामीण विकास में कुक्कुट पालन की दो प्रमुख भूमिकाएं हैं । कुक्कुट पालन प्रथमतः छोटे व सीमांत किसानों, भूमिहीन मजदूर, बेराजगार शिक्षित युवकों आदि के लिये एक सम्माननीय व लाभप्रद व्यवसाय प्रदान करता है तथा दूसरा यह कि कुक्कुट एक पौष्टिक आहार प्रदान करता है।

ब्रायलर पालन से लाभ

1. कम भूमि की आवश्यकता
2. कम प्रारंभिक लागत
3. पैसे की शीघ्र वापसी
4. व्यापार में लचीलापन
5. कम लागत में अधिक उत्पादन
6. स्वरोजगार का अवसर

व्यवसायिक ब्रायलर फार्मिंग का मुख्य आधार अच्छी नस्ल के चूजे तथा चूजों का समुचित प्रबन्धन है क्योंकि चूजे ही बड़े होकर आय का स्रोत बनते हैं । अतः अधिक आय के लिए ब्रायलर चूजों का पालन ध्यानपूर्वक एवं वैज्ञानिक ढंग से ही करना चाहिए। कुक्कुट जीवन के प्रथम 5 या 6 सप्ताह का समय ब्रूडिंग काल कहलाता है तथा इस काल में चूजों को जहाँ रखा जाता है उस भवन को ब्रूडर हाउस कहते हैं । ब्रूडर हाउस बनाते समय निम्न बिन्दुओं का घ्यान रखना आवश्यक है :

1. ब्रूडर भवन (हाउस) अलग एवं व्यस्क मुर्गियों के शेड से कम से कम 300 फिट दूर होना चाहिए अन्यथा रोग फैलने का भय रहता है।
2. ब्रूडर भवन के बाहर लगभग 100 फिट पर एक चाहरदीवारी बना देनी चाहिए तथा इस चाहरदीवारी का दरवाजा बन्द रखना चाहिए।
3. ब्रूडर भवन के अंदर आगन्तुको का आवागमन नहीं होना होना चाहिए।
4. ब्रुडर भवन के सफाई एवं निःसंक्रमण का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। ब्रुडर भवन खुला एवं हवादार होना चाहिए।
5. ब्रुडर भवन के बाहर छोटे गड्ढे में संक्रमण रोधी पदार्थ भर देना चाहिए ताकि भवन में घुसने से पूर्व पैर धोये जा सके।
6. ब्रूडिंग प्रक्षेत्र, सुखे व ऊँचे स्थान पर जहाँ चूहे आदि न पहूंच सकें, बनाना चाहिए। कृषि हेतु जो भूमि बेकार हो एवं जल निकास सुविधा युक्त हो, उसका प्रयोग किया जा सकता है।
7. शेड के किनारे की दीवरें उत्तर-दक्षिण तथा अन्त की दिवारें पूरब-पश्चिम की

ओर होनी चाहिए। शेड की छत सिरों पर 3-4 फिट छज्जा निकाल देना चाहिए।

8. शेड का फर्श बाहरी भूमि से कम से कम एक फिट उंचा होना चाहिए।

ब्रूडर भवन की तैयारी

चूजों का नया समूह आने से पूर्व ही ब्रूडर भवन के बाहर की चाहरदीवारी के अन्दर प्रत्येक वस्तु की साफ सफाई अति आवश्यक है।

ब्रूडर भवन तथा उपकरणों की सफाई

चूजों का एक समूह निकलते ही पूरे भवन की सफाई, नि:संक्रमण इत्यादि तुरन्त ही प्रारम्भ कर देना चाहिए ताकि नये समूह के आने से पूर्व भवन एक या दो सप्ताह खाली पड़ा रहे। नि:संक्रमण एवं धूम्रकरण से कीटाणु व अन्य रोग फैलाने वाले कारक नष्ट हो जाते हैं तथा भवन खाली रहने से कई परजीवी एवं कीटाणुओं का जीवन-चक्र भंग हो जाता है। अत: रोगों की रोकथाम के लिये यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सफाई निम्न प्रकार होनी चाहिए :

(क) **पुराने लिटर का निष्कासन :** प्रयोग में लाया पुराना लिटर पूर्णतया ब्रूडर भवन से हटा देना चाहिए।

(ख) **भवन की सफाई :** सारा कूड़ा-करकट भवन से दूर ले जाना चाहिए तथा फर्स को खुरच कर सफाई कर देनी चाहिए। पानी की तेज धार से भवन के अन्दर धो दें एवं चूने से पुताई कर दें। नि:संक्रमण के उपरान्त भवन को सूखने देना चाहिए।

(ग) **उपकरणों की सफाई :** समस्त उपकरण जैसे दाना-पानी के बर्तन आदि को भवन से बाहर लाकर अच्छी तरह मंजाई, धुलाई तथा नि:संक्रमण कराना आवश्यक है।

(घ) **धूमकरण :** भवन को बन्द करके अथवा पर्दों से ढक कर फार्मेलडिहाइड की 3 गुनी सान्द्रता द्वारा धूम्रकरण करना चाहिए। दाना संग्रहण हेतु बंद बर्तन भी धूम्रंजित करा दें तथा ब्रूडर हाउस के बाहर साफ-सफाई तथा घास कटाकर सारे क्षेत्र में संकमण रोधी पदार्थों का छिड़काव करवायें।

ब्रूडर भवन में चूजों का प्रबन्धन

(1)**प्रति मुर्गी भूमि की आवश्यकता:** ब्रूडर भवन में प्रति मुर्गी भूमि की आवश्यकता इस बात पर निर्भर करती है कि उस भवन में बड़ी से बड़ी कितनी आयु की मुर्गी/ मुर्गा रखा जाना है। इसके अतिरिक्त प्रजनन में प्रयोग होने वाले नर व मादा को अधिक जगह की आवश्यकता होती है। ग्रीष्म ऋतु में शीत काल की अपेक्षा अधिक जगह की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त जगह का आकलन मुर्गी की नस्ल व प्रकार के अनुरूप होता है। ब्रायलर चूजों हेतु विभिन्न आयु के लिए प्रति चूजा भूमि की आवश्यक तालिका 1 में दी गई है।

प्रति मुर्गी आंकलन करते समय उपकरणों जैसे दाना-पानी के बर्तन आदि द्वारा घेरे जाने वाला क्षेत्र भी ध्यान में रखना चाहिए।

चूजों में सघनता का कुप्रभाव

चूजों को पर्याप्त जगह मिलनी चाहिए। सघनता के कारण निम्नलिखित कुप्रभाव पड़ते हैं:-

1. चूजे दाना कम खाते हैं ।
2. चूजों की वृद्धि दर कम हो जाती है।
3. दाने को मांस में परिवर्तित करने की क्षमता घट जाती है।
4. मृत्यु दर में वृद्धि।
5. मांसाहारी एवं हिंसक प्रवृत्ति बढ़ने के कारण चूजे एक-दूसरे को काट-काट कर घायल कर देते हैं ।
6. वक्ष में छाले बनने की अधिक सम्भावना ।
7. पंखों की वृद्धि में ह्रास ।
8. मांस उत्पादकता एवं गुणवत्ता में कमी।
9. अधिक खर्चा व हानि ।

तालिका - १

ब्रायलर चूजों हेतु संस्तुत फर्श का स्थान, आहार तथा पानी का स्थान

आयु सप्ताह में	फर्श स्थान वर्ग फीट/चूजा	आहार स्थान इंच/चूजा	पानी का स्थान इंच/चूजा
1	0.2	1.5	0.5
2	0.2	2.0	0.7
3	0.3	2.0	0.7
4	0.4	2.5	0.8
5	0.6	2.5	0.8
6	0.8	3.0	1.0
7	0.9	3.0	1.0

लिटर

विभिन्न प्रकार के लिटर पदार्थ जैसे धान की भूसी, लकड़ी का बुरादा, भुरभुरी मिट्टी आदि प्रयोग में लाये जाते हैं । ब्रूडर भवन के फर्श पर लगभग 2 इंच (5 सेमी0) मोटा लिटर बिछा देना चाहिए। लिटर की मोटाई मौसम के अनुसार परिवर्तित की जा सकती है। जाड़ों में अधिक मोटा लिटर बिछाना चाहिए। पुराना व कीटाणुनाशक छिड़का लिटर प्रयोग में न लाएं। अच्छे लिटर पदार्थ में निम्नलिखित गुण होते हैं :-

1. सस्ता होना चाहिए।
2. हल्का होना चाहिए।
3. शोषण क्षमता अधिक होनी चाहिए।
4. मलायम व दबने वाला होना चाहिए।
5. उष्मा संचालन क्षमता कम होनी चाहिए।
6. वातावरण से नमी न ले ।
7. खाद की तरह प्रयोग किया जा सके ।

प्रथम तीन सप्ताह में लिटर हल्का नम होना चाहिए। अत्यकिध शुष्क लिटर पर चूजों का निर्जलीकरण होने का भय रहता है। प्रयोग होते-होते लिटर यदि अधिक गीला हो जाए तो लिटर पपड़ी व अधिक गीला लिटर हटा कर सूखा लिटर मिला देना चाहिए।

अमोनिया वाष्प की रोकथाम

चूजों के मल एवं नमी के कारण ब्रूडर हाउस में नौसादर जैसे गन्ध व वाष्प रहती है। इसका स्तर बढ़ने पर भवन में घुसने से आंखों में जलन का आभास होता है। अधिक अमोनिया वाष्प के कारण चूजों का वजन कम हो जाता है। फास्फोरिक अम्ल (1.91 किलो/वर्ग मी0) या सुपर फास्फेट (1.09 किलो/वर्ग मी0) के प्रयोग से अमोनिया वाष्प पर नियंत्रण किया जा सकता है। चूने का प्रयोग भी अमोनिया की रोकथाम के लिये किया जा सकता है।

ब्रूडर भवन में थोड़ी आर्द्रता आवश्यक भी है क्योंकि शुष्क वातावरण में चूजे ठीक से नहीं पनपते तथा पंखों का विकास भी ठीक से नहीं होता।

रंगीन या सफेद बल्व द्वारा प्रकाश प्रदान कराना चाहिए। खुले भवनों में भी प्रथम 48 घंटों में कृत्रिम प्रकाश देना चाहिए। प्रथम दो दिन तीव्र प्रकाश देना लाभकारी सिद्ध होता है। उसके बाद प्रकाश की तीव्रता कम कर देनी चाहिए।

तापमान

ब्रूडर का तापमान 85-90 डिग्री फारेनहाइट (30-32^{0} सेन्टीग्रेड) लिटर के 2 इंच उपर तथा केनापी के 6 इंच बाहर तक, 1 दिन आयु के चूजों के लिये होना चाहिए। मांस व प्रजनन हेतु व नर चूजों के लिए अधिक ताप की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे चूजे बढ़े होते जाएं तापमान 5-7^{0} सेन्टीग्रेड/सप्ताह कम करते जायें। यदि चूजे हॉवर से दूर चले जायें तो इसका अर्थ है तापमान अधिक है और यदि हावर के अन्दर घुसकर गुच्छा सा बनाएं तो तापमान कम समझना चाहिए। स्थिति अनुसार तापमान बढ़ा या घटा दें। यदि चूजे हावर के नीचे समान रूप से वितरित हो तो तापमान सही समझना चाहिए। जब तक चूजों के पंख पूरी तरह न निकल जाये बाहय उष्मा स्रोत न हटाएं। सामान्यतः आरम्भ में 1 वाट प्रति चूजा तथा बाद में 1/2

वाट प्रति चूजे के हिसाब से बल्ब लगा कर उष्मा प्रदान की जा सकती है। बिजली न होने पर अंगीठी या बुखारी जलाकर उष्मा प्रदान की जा सकती है।

पानी

चूजे शीघ्र ही खाना व पीना सीख लेते हैं । चूजों को प्रतिदिन स्वच्छ व ताजा पानी उपलब्ध करायें। पानी के बर्तन रोज साफ करके एकदम हावर के बाहर लिटर पर ही रखें । चूजों के आने से 4 घण्टा पूर्व ही पानी ब्रूडर भवन में रख दें ताकि पानी का तापमान ब्रूडर भवन के अनुरूप (लगभग 65^0 सेन्टीग्रेड या अधिक हो जाए।) पानी में चीनी भी मिलाई जा सकती है। इससे प्रारंभिक मृत्यु दर कम हो सकती है। प्रथम 15 घण्टों में 8 प्रतिशत तक चीनी पानी में मिलाकर दी जा सकती है। यदि चूजे दबावग्रस्त दिखाई दें तो प्रथम 3-4 दिन पानी में विटामिन व इलैक्ट्रोलाईट्स घोल कर दिये जा सकते हैं । पानी सदैव दाने से पूर्व दें तथा यदि सब चूजों को पानी नहीं मिल पा रहा हो तो पानी के बर्तन व प्रकाश की तीव्रता बढ़ा दें । शुरू में फव्वारेनुमा बाद में नालीनुमा बर्तन प्रयोग में लाये जाते हैं ।

दाना

चूजों को स्वच्छ व ताजा दाना ही उपलब्ध कराएं जो कि उनकी शारीरिक वृद्धि व आवश्यकताओं के लिये उपयुक्त अवयव प्रदान कर सकें। दाना संग्रहण अधिक से अधिक सात दिन तक के लिये होना चाहिए। बढ़े चपटे बर्तनों में दाना रखें ताकि सब चूजों को आसानी से दाना मिल सके। दाना थोड़ा-थोड़ा व जल्दी-जल्दी लगाना चाहिए। यह भी सुनिश्चित कर लें कि दाना सब चूजे खा पा रहे हैं या नहीं । यदि कुछ समस्या है तो उसका निदान करें। कुछ प्रक्षेत्रों में एवं मौसम में वेन्ट पेस्टिंग की समस्या हो जाती है। इसके निवारण हेतु टूटी मक्का (छोटा कण) देनी चाहिए। ब्रायलर चूजों के सप्ताहवार मानक शरीर भार, आहार खपत तथा आहार की मांस में परिवर्तन की क्षमता तालिका 2 में दर्शाई गई है।

तालिका -२

ब्रायलर स्टाक का मानक शरीर भार, आहार खपत और आहार परिवर्तन

आयु	शरीर भार एवं प्राप्ति		आहार खपत		आहार परिवर्तन	
सप्ताह में	औसत भार (ग्रा.)	साप्ताहिक प्राप्ति(ग्रा.)	साप्तिाहिक (ग्रा.)	संचयी (ग्रा.)	साप्ताहिक	संचयी
1	190	150	121	121	0.81	0.81
2	325	175	268	393	1.53	1.21
3	540	215	353	756	1.64	1.40
4	820	280	540	1230	1.93	1.50
5	1130	310	670	2000	2.16	1.77

लम्बे होते हैं तथा उपर चौड़ी जाली रहती है ताकि चूजे बर्तन के अन्दर न घुसें और दाना खराब न हो।

दाना संग्रहण

दाना संग्रहण के लिये बड़े ड्रम के प्रकार की ढक्कनदार बर्तन प्रयोग में लाया जाना चाहिए। यह बर्तन इतने बड़े हो कि लगभग एक सप्ताह का दाना संग्रहित कि जा सके ।

प्रमुख बिन्दु

1. ब्रायलर उत्पादन हेतु अच्छी नस्ल के चूजे प्रतिष्ठित हैचरी अथवा स्रोत से लेने चाहिए।
2. ब्रूडर हाउस उंचे व सूखे स्थान पर बनायें।
3. ब्रूडर हाउस हवादार होने चाहिए तथा ताप नियंत्रण सुचारू होना चाहिए।
4. लिटर सूखा एवं स्वच्छ रहे तथा कभी-कभी लिटर को स्क्रेपर अथवा खुरपी के सहायता से हिलाते रहना चाहिए।
5. दाना पानी के बर्तन स्वच्छ एवं नि:संक्रमित हो ।
6. दाना व पानी स्वच्छ एवं ताजा दें । दाना अच्छे प्रकार का होना चाहिए ।
7. प्रति मुर्गी पर्याप्त भूमि उपलब्ध करायें। चूजों को कभी भी सघन न होने दें।
8. नियमित निरीक्षण, उपचार एवं मृत चूजों का निष्कासन तथा शव विच्छेदन आदि कराना चाहिए।
9. टीकाकरण कार्यक्रमानुसार करायें।
10. सारे चूजे एक साथ अन्दर व एक साथ बाहर प्रणाली रोग नियंत्रण में अत्याधिक प्रभावी है अत: इसे अपनाएं।

कुछ अन्य विशेष ध्यान देने योग्य बातें जो कि ब्रायलर उत्पादन को प्रभावित करती है तथा कृषक के लाभ को भी प्रभावित करती है, निम्न प्रकार हैं :-

1. कुक्कुट आहार की उंची कीमत एवं मिलावटी अथवा निम्नस्तरीय दाना ।
2. अच्छी नस्ल के चूजों की अनुपलब्धता तथा बिचौलियों द्वारा अच्छी नस्ल के साथ चूजों की मिलावट ।
3. अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल ।
4. ब्रायलर तथा ब्रायलर उत्पादों की मांग में उतार-चढ़ाव / अनिश्चित विपणन ।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए सदैव प्रयास करना चाहिए कि इन कारणों से होने वाली हानि को रोकने के उपाय किये जायें तथा आवश्यकता पड़ने पर नजदीकी विशेषज्ञों की राय ले ली जाये ।

6	1500	370	836	2850	2.28	1.90
7	1850	350	865	3718	2.47	2.01

सारे चूजे एक साथ अन्दर व एक साथ बाहर प्रबन्ध

इस प्रकार के प्रबन्ध में एक ब्रूडर भवन में एक साथ लगभग एक ही आयु के चूजे अन्दर लिये जाते हैं तथा ब्रूडिंग के पश्चात् उन्हें एक साथ ब्रूडर भवन से निकाल दिया जाता है। उसके बाद नया समूह लेने से पूर्व भवन व प्रक्षेत्र की साफ-सफाई व निःसंक्रमण आदि कर लिया जाता है। इस प्रकार का प्रबन्ध रोग नियंत्रण एवं उन्मूलन में काफी प्रभावी होता है किन्तु इसमें मजदूरी की लागत ज्यादा आती है। इस कारण कई प्रक्षेत्रों पर अलग-अलग आयु सीमा के चूजे अलग-अलग पाले जाते हैं ।

ब्रूडिंग उपकरण

(क) ताप नियंत्रण : ब्रूडर भवन में ताप नियंत्रण हेतु विभिन्न प्रकार के ईंधन या ईंधन स्रोत प्रयोग में लाए जाते हैं, जैसे द्रवित पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, मीथेन, मिट्टी का तेल, लकड़ी कोयला, बिजली, सौर उर्जा आदि ।

(ख) हॉवर टाइप ब्रूडर : सर्वाधिक प्रयोग में आने वाले ब्रूडर हॉवर प्रकार के ही होते हैं। बैटरी ब्रूडर का प्रयोग अधिक नहीं होता। हावर टाइप ब्रूडर में प्रति इकाई धातु का एक गोल या कोणीय टुकड़ा उष्मा को परावर्तित करने के लिये प्रयोग किया जाता है। हावर को एक रस्सी या तार के सहारे छत से लटका दिया जाता है और आवश्यकतानुसार उंचा या नीचा किया जा सकता है। हावर प्रकार के ब्रूडर विभिन्न प्रकार से गर्म रखे जा सकते हैं, जैसे गैस, मिट्टी का तेल, बिजली का बल्ब आदि। एक 6 फिट के हावर में लगभग 500 चूजे रखे जा सकते हैं ।

(ग) ब्रूडर गार्ड : ब्रूडर के अन्दर चूजों को उष्मा स्रोत के समीप एक सीमा के अन्दर ही केन्द्रित रखने के लिये ब्रूडर गार्ड का प्रयोग होता है। यह 16-24इन्च चौड़ी पट्टियां होती है जिन्हें उष्मा स्रोत के चारों ओर खड़ा कर घेराबन्दी कर दी जाती है। जैसे-जैसे चूजे बड़े होते जाते हैं यह घेरा बढ़ा दिया जाता है। ब्रूडर गार्ड ठोस या जालीदार हो सकते हैं किन्तु ठोस ब्रूडर गार्ड अधिक प्रचलित हैं ।

(घ) पानी के बर्तन : छोटे चूजों के लिये छोटे फव्वारेनुमा पानी के बर्तन प्रयोग में लाए जाते हैं। इसमें एक कटोरे के अन्दर जारनुमा बर्तन उल्टा करके रखा जाता है जिसमें से पानी धीरे-धीरे कटोरे में आता रहता है। इसके बाद बड़े बर्तन प्रयोग किये जाते हैं ।

(ड.) दाने के बर्तन : प्रथम पांच दिनों में दाने के लिये चपटे, चौड़े व उथले बर्तनों का प्रयोग करना चाहिए। इसके बाद ट्रफ या नालीनुमा बर्तन जिस पर चौड़ी जालीदार ढक्कन हो, उनमें दाना देना चाहिए। यह जालीदार बर्तन लगभग 4-6 फिट

कुक्कुट में होने वाले प्रमुख रोग, उनके लक्षण एवं बचाव

सफल कुक्कुट पालन के लिए मुर्गियों में होने वाले रोगों के बारे में जानकारी अति आवश्यक है, क्योंकि इससे कुक्कुट पालक को अत्यधिक आर्थिक हानि हो सकती है। रोग से ग्रसित मुर्गी से निम्न लक्षण परिलक्षित होते हैं जो कि स्वस्थ्य मुर्गी से अलग होते हैं :-

- बीमार मुर्गी एक स्थान पर बैठ जाती है तथा घूमना फिरना बन्द कर देती है।
- खाना-पीना कम या बिल्कुल बन्द कर देती है।
- पंख ढीले पड़ जाते हैं तथा मुर्गी थरथराती है।
- मुर्गी को पेचिस हो जाती है।
- बीमारी मुर्गी का वजन व अण्डा उत्पादन कम हो जाता है।
- आंखों की चमक कम हो जाती है तथा कभी कभी आंखें खराब हो जाती है।
- रोग की प्रकोपता बढ़ने पर मृत्युदर बढ़ जाती है।

मुर्गियों में पाये जाने वाले रोगों को कारक जीवों के आधार पर निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया है।

जीवाणु जनित रोग

मुर्गी गृह या मुर्गियों में जीवाणुओं की उपस्थिति एक आम बात है। जीवाणु प्रायः मुर्गी से अण्डे के माध्यम से चूजों में तथा मुर्गी के मल-मूत्र से अण्डे में स्थानान्तरित होते हैं । मुर्गी घर में जीवाणु पानी-दाना, हवा, बिछावन व मुर्गी घर में प्रयोग होने वाले उपकरण तथा काम करने वाले व्यक्ति के जरिए चूजों या मुर्गी में आ सकते हैं । जीवाणुओं से होने वाली प्रमुख बीमारियाँ निम्न प्रकार की है।

रोग	लक्षण	बचाव एवं उपचार
ओम्फालाइटिस	1-4 दिन की आयु के चूजों में होती है। चूजों का पेट फूल जाता है तथा पेंट में अन्दर काला, पीला या नीला पानी जमा हो जाता है। चूजों का यकृत, गुर्दे, फेफड़े या हृदय खराब हो जाते हैं तथा मृत्युदर बढ़ जाती है।	बचाव के लिए चूजों को पहले 5 दिन तक डाक्टर की सलाह पर पैलविन/एनरोसिन/फ्लोक्सीडिन/ नियोडाक्स/ कोलीस्टीन आदि दवाएँ इलेक्ट्रोलाइट्स को पानी में घोलकर देना चाहिए।
पुल्लोरम	चूजे व वयस्क मुर्गियों में पायी जाती है। चूजे ब्रूडर के नीचे एकत्रित होते हैं। सफेद या हरे रंग की पेचिस होती है तथा सांस लेने में कठिनाई होती हैं। 7-10 दिन के अन्दर चूजे मरने लगते हैं, मुर्गी दाना खाना कम कर देती है तथा पेचिस का शिकार हो जाती है। फलतः अण्डा उत्पादन कम हो जाता है।	पुल्लोरम रहित फार्म या हैचरी से ही चूजे खरीदने चाहिए। मुर्गियों को स्वस्थ्य मुर्गियों से अलग कर देना चाहिए।कुक्कुट आवास हवादार होने तथा बिछावन पर विसंक्रमणकारी घोल का छिड़काव करना चाहिए। रोग के उपचार के लिए स्लफोनामाइड्स/एनरोफ्लोक्सोसिन/ फैफ्लोक्सोसिन/सिपरोफ्लोक्सोसिन/

		टेरामाइसिन/माइकोसल आदि दवाओं को पानी में घोल बनाकर पिलाना चाहिए।
फाल टायफाएड (मियारी बुखार)	यह रोग वयस्क मुर्गियों में होता है मुर्गियाँ दाना खाना कम कर देती है, पंख असंतुलित हो जाते हैं, कलगी सूख जाती है, खून की कमी हो जाती है, मुर्गी सूख कर मर जाती है।	बीमार पक्षियों को अलग रखना चाहिए, कुक्कुट आवास में संवातन की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। उपचार के लिए सल्फोनामाइड्स/एनरोफ्लो-क्सोसिन/फैफ्लोक्सोसिन/सिप्रोफ्लो-क्सोसिन/टेरामाइसिन/माइकोसल आदि दवाओं को पानी में घोल बनाकर पिलाना चाहिए ।
फाउल पैरा टायफाइड	यह रोग दो सप्ताह तक की उम्र के चूजों में होता है। बीमार चूजे सिर को नीच के झुकाये खड़े रहते हैं।दाना खाना कम कर देते हैं, पेचिस हो जाती है तथा लंगड़ा कर चलते हैं। चूजों की आंत में सूजन आ जाती तथा 10-20 प्रतिशत तक चूजे मर जाते हैं ।	कुक्कुट आवास में अन्य पक्षियों,चूहों तथा आगंतुकों का प्रवेश बन्द कर देना चाहिए इसके उपचार के लिए भी फाउल टायफाइड में प्रयोग की गई दवाओं का प्रयोग किया जाता है।
कुक्कुट हैजा	मुर्गी दाना कम खाती है, तेजी से सांस लेती है, मुंह से लार बहती है कलगी तथा गलचर्म में सूजन व नीलापन आ जाता है, पेचिस होती है तथा 10-20 प्रतिशत मुर्गियाँ मर जाती है।	कुक्कुट आवास में चूहे व मक्खी पर पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए।दाने-पानी के बर्तन साफ व बिछावन स्वच्छ होनी चाहिए। सल्फानोमाइड्स/टेट्रौसाइक्लीन/माइकोसल/एरिथ्रोसिन आदि दवाओं को पानी में घोलकर पिलाना चाहिए, बीमारी का प्रभाव तीव्र होने पर मुर्गियों को जेन्टामाइसिन/एरिथ्रोमाइसिन/लिंकोस्पैक्टिन/टेट्रासाइक्लिन आदि दवाओं का इन्जेक्शन देना चाहिए।
जुकाम (कोराइजा)	मुर्गी की आंख,चेहरे व कलगी में सूजन आती है, सांस लेने में कठिनाई होती है व कभी कभी छींक आती है, अण्डा उत्पादन कम हो जाता है तथा बीमार मुर्गियाँ मर जाती है।	कुक्कुट आवास हवादार हो, अमोनिया गैस एकत्र नहीं होनी चाहिए, मुर्गियाँ प्रत्याबल से मुक्त होनी चाहिए, बीमार मुर्गियों को अलग कर देना चाहिए। सल्फानोमाइड्स/एरिथ्रोमाइसिन/लिंकोस्पैक्टिन/टेट्रासाइक्लिन/टाइलोसिन तथा माइकोसल दवाइयों का घोल बनाकर पानी में पिलाना चाहिए।
पुराना जुकाम (सी०आर०डी०)	व्यस्क पक्षियों में सांस ने में परेशानी होती है, नाक से पानी आता है व खांसी भी आती है, छींकते हुए व सांस लेते	पुराना जुकाम रहित फार्म या हैचरी से ही चूजे प्राप्त करने चाहिए, बीमार मुर्गी की पहचान करके स्वस्थ पक्षियों

	समय आवाज सुनाई पड़ती है, दाना कम खाती है, फलस्वरूप अण्डा उत्पादन घट जाता है, फेफड़े व वायु कोष में पीले रंग के दाने पाये जाते हैं ।	से अलग कर देना चाहिए।लिंकोस्पैक्टिन /टाइलोसिन/टाइमोटिन/एरिथ्रोमाइसिन आदि दवाओं को पानी में घोलकर पिलाना चाहिए।
किलनी बुखार	यह हर उम्र की मुर्गियों में होता है, बीमार मुर्गी पड़ी रहती है तथा चेहरा पीला पड़ जाता है, शरीर का तापमान बढ़ जाता है, मुर्गी दाना खाना बंद कर देती है तथा पानी ज्यादा पीती है, शरीर में रक्त की कमी हो जाती है, अंततः मुर्गी मर जाती है।	रोकथाम के लिए मुर्गीघर में किलनियों अंकुश लगाना चाहिए। बीमारी के इलाज हेतु टेट्रासाइक्लीन/पैलविन/एनरोफ्सोसिन /एम्पीसीलीन/एमोफ्सीलिन/एम्पीसाइ-क्लीन/ आदि दवाओं को पानी में घोलकर पिलाना चाहिए। बीमारी का प्रभाव तीव्र होने पर मुर्गियों को जेन्टामाइसिन/टेरामाइसिन/पेनीसलीन/ स्ट्रेप्टोमाइसिन आदि दवाओं का इन्जेक्शन देना चाहिए।

विषाणु जनित रोग

मुर्गियों में विषाणु जनित रोग आर्थिक दृष्टि से अधिक हानिकारक होते हैं। क्योंकि इन बीमारीयों का इलाज उपलब्ध नहीं है। विषाणुओं द्वारा रोगों के लिए एण्टीबायोटिक्स लाभदायकनहीं होती हैं अतः इन रागों को टीकाकरण एवं जैव सुरक्षा प्रबन्ध के द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है। विषाणु जनित रोगों से बचाव व रोकथाम के लिए, पक्षियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा रोग ग्रसित मुर्गियों को अन्य संक्रमणों से बचाने हेतु दवाएं दी जाती है। मुर्गियों में विषणुओं से होने वाले कुछ महत्वपूर्ण रोगों का वर्णन निम्नलिखित है :-

रोग	लक्षण	रोकथाम एवं उपचार
रानी खेत (आर0 डी0)	यह बीमारी हर उम्र की मुर्गी को प्रभावित करती है इस बीमारी के होने पर पक्षी एक जगह पर एकत्रित हो जाते हैं, खाना-पीना बन्द कर देते हैं, सफेद व हरे रंग की पेचिस होती है। कुछ पक्षी खड़े नहीं हो पाते हैं या कुछ की गर्दन टेढ़ी हो जाती है। प्रभावित मुर्गियाँ मर जाती है, कभी-कभी पूरा कुक्कुट समूह नष्ट हो जाता है। यह बीमारी एक महामारी का रूप धारण कर लेती है।	बीमारी होने पर तुरन्त आर0डी0 एफ0 वैक्सीन की 1-1 बूंद हर मुर्गी की नाक व आंख में देना चाहिए। पानी में एण्टीबायोटिक्स तथा मल्टीविटामिन का घोल पिलाना चाहिए, मरी हुई मुर्गी को जलाकर या दफनाकर पूर्णतया नष्ट कर देना चाहिए। बीमारी की रोकथाम के लिए आर0डी0 टीकाकरण करना चाहिए।
मैरेक्स (एम० डी०)	यह बीमारी ज्यादातर 8-16 सप्ताह की उम्र वाली मुर्गियों में होती है। इस बीमारी के कारण मुर्गियों में लकवा हो जाता है व गर्दन टेढ़ी हो जाती है। मुर्गी	बीमारी होने पर पानी में मल्टी विटामिन देने से मुर्गियों को राहत मिलती है लेकिन रोकथाम के

	एक पांव आगे व एक पीछे करके पड़ी रहती है। जिससे वे दाना-पानी ठीक से नहीं खा पाती, फलस्वरूप मुर्गी मर जाती है। कुछ मुर्गियां अंधी हो जाती है, मरी हुई मुर्गियों के जिगर, गुर्दो आदि में गाँठे (ट्यूमर) हो जाती है।	लिए एक दिन की उम्र वाले चूजों को टीका देना आवश्यक है। प्रभावित मुर्गियों के गिरे हुए पंखों को जलाकर या दफनाकर नष्ट कर देना चाहिए।
गम्बोरो (आई० बी०डी०)	यह बीमारी 3-12 सप्ताह तक के पक्षियों में होती हैं। इस बीमारी में मुर्गी व चूजे आवास के एक कोने में सिर झुकाए खड़े रहते हैं,चूजे थरथराते हैं, सफेद व पीले रंग की पेचिस होती है, दाना कम खाते हैं तथा 20-30 प्रतिशत तक बीमार मुर्गियां मर जाती है। इस बीमारी के कारण पक्षियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता में गिरावट आती है, जिसके कारण मुर्गियाँ अन्य रोगों की शिकार हो जाती है तथा मृत्युदर बढ़ जाती है। और टीकाकरण का फायदा मुर्गियों को नहीं हो पाता।	इस बीमारी के उपचार के लिए में एण्टीबायोटिक्स,मल्टीविटामिन तथा लिमामीजल का घोल एवं जीट्रेस आदि दवाइयों को पिलाने से फायदा हो सकता है। इस बीमारी की रोकथाम के लिए चूजों को 3 और 5 सप्ताह पर टीकाकरण अवश्य कराएं जिस मुर्गी में टीकाकरण हो चुका है उसी के द्वारा दिये गये अण्डों से चूजे प्राप्त करने चाहिए। मरी हुई मुर्गियों को सही ढंग से नष्ट कर देना चाहिए ।
लीची रोग	यह बीमारी 3-10 सप्ताह तक के पूंजी में होती है। इस बीमारी के कारण चूजे खाना पीना बन्द कर देते हैं तथा उन्हें सफेद, हरे या पीले रंग की पेचिस हो जाती है, ग्रसित चूजे पंख ढीले करके खड़े रहते हैं तथा 24 घंटे के अन्दर मर जाते हैं । इस बीमारी के कारण 70-80 प्रतिशत तक मृत्युदर हो जाती है, मरे हुए चूजों के हृदय के उपर पानी जमा हो जाता है तथा कभी कभी मोटा सफेद आवरण पाया जाता जो दिखने में छिली हुई लीची जैसा दिखता है। यह बीमारी ज्यादातर कम प्रतिरोधक क्षमता वाले चूजों में होती है।	इस बीमारी के होने पर मुर्गियों को मल्टीविटामिन,जीट्रेंस आदि का घोल बनाकर पानी में पिलाना चाहिए। रोकथाम के लिए अभी भी सही टीका उपलब्ध नही है, लेकिन चूजों की रोग प्रतिरोधक क्षमता न घटने पाये इसका ध्यान रखना जरूरी है। चूजों को गम्बोरो से बचाकर इस बीमारी पर अंकुश लगाया जा सकता है।
चेचक (फाउल पॉक्स)	यह हर उम्र की मुर्गियों में पायी जाती है परन्तु 8 सप्ताह से अधिक उम्र की मुर्गियों में सबसे अधिक होती है। इस बीमारी में मुर्गियों की कलंगी, गलचर्म, चेहरा व पांव आदि पंख विहीन अंगों पर फुंसी जैसे दाने दिखते हैं । 2-4 दिन के बाद फुंसी घाव का रूप ले लेती है तथा 8-10 दिन बाद घाव सूखकर पपड़ी बन जाता है, मुर्गी दाना कम खाती है, फलस्वरूप अण्डा उत्पादन घट जाता है, शारीरिक वजन कम हो जाता है। मृत्युदर कम होती है लेकिन जब यह दाने मुंह के अन्दर होते हैं, तब मुर्गियों को खाने-पीने में	मुर्गियों को एण्टीबायोटिक्स,मल्टी विटामिन आदि दवाइयों को पानी में मिलाकर देना चाहिए। रोकथाम के लिए टीकाकरण अवश्य करायें। मुर्गी आवास में मच्छर का नियत्रंण अति आवश्यक है।

	कठिनाई होती है जिस कारण मृत्युदर बढ़ जाती है।	
ई0डी0 एस0-76	यह बीमारी अण्डे देने वाली मुर्गियों में होती है।इस बीमारी के कारण मुर्गियों में अण्डा उत्पादन अचानक घट जाता है, कुछ मुर्गियों में अण्डा देना बिल्कुल बन्द हो जाता है तथा कुछ मुर्गियाँ पतले व बिना छिल्के वाला अण्डा देती है। बीमारी के 3-4 सप्ताह के बाद अण्डे की पैदावार में थोड़ा सा सुधार होता है। किसी किसी मुर्गी में दस्त भी आते हैं और इसके अलावा कोई अन्य लक्षण दिखायी नहीं देता।	प्रभावित मुर्गियों को पानी में मल्टी विटामिन, कैल्शियम, फास्फोरस, देना चाहिए।बीमारी की रोकथाम के लिए 18-20 सप्ताह कीमुर्गियों को ई.डी.एस.-76 का एक टीका मांसपेशी में देना चाहिए। यह बीमारी अण्डे द्वारा संक्रमित होती है अत: ई.डी.एस.-76 बीमारी मुक्त फार्म या हैचरी से ही चूजे प्राप्त करने चाहिए। मुर्गियों को बतखों से दूर रखना चाहिए।

टीकाकरण से संबंधित कुछ आवश्यक जानकारियां

विषाणुओं द्वारा फैलने वाली बीमारियों की रोकथाम के लिए टीकाकरण किया जाता है। टीकाकरण करते समय कुछ बातें घ्यान में रखनी चाहिए जो निम्नलिखित है :-

1. कुक्कुट पालक को टीकाकरण का उपयुक्त समय, विधि तथा खुराक के बारे में पशु चिकित्साधिकारी से जानकारी लेनी चाहिए।
2. टीके के बारे में सही जानकारियां जैसे उसका स्रोत, बैच नं0 व नाम आदि नोट करना चाहिए।
3. टीका और उसका घोल बनाने में प्रयोग होने वाले पदार्थ को रेफ्रीजरेटर में रखना चाहिए, रेफ्रीजरेटर न होने की स्थिति में बर्तन में बर्फ डालकर रखा जा सकता है।
4. टीके को निर्माता कम्पनी के निर्देशानुसार प्रयोग करना चाहिए।
5. टीकाकरण सुबह करना चाहिए।
6. टीकाकरण बीमार मुर्गियों में नहीं करना चाहिए।
7. टीकाकरण करने पर कुछ प्रतिक्रिया से बचने के लिए टीकाकरण के तीन दिन पहले तथा तीन दिन बाद तक मल्टीविामिन का घोल पिलाना चाहिए।

मुर्गियों में टीकाकरण कार्यक्रम

टीके का नाम	पक्षी की उम्र	खुराक	टीकाकरण का ढंग
मैरेक्स वैक्सीन	एक दिन	0.2 मिली0	गर्दन की चमड़ी की नीचे
आर.डी.एफ.स्ट्रेन	1 या 5 दिन	2 बूंद	1-1 बूंद आंख तथा नाक के माध्यम से
आई.बी.डी.	14 दिन	2 बूंद	-उक्त-
इण्टरमीडिएट स्ट्रेन			
आर.डी.एफ.स्ट्रेन	28 दिन	2 बूंद	-उक्त-

आई.बी.डी.	35 दिन	2 बूंद	-उक्त-
इण्टरमीडिएट स्ट्रेन			
फाउल पॉक्स	42 दिन	1 बूंद	पंख की चमड़ी में
आर.डी.आर. 2बी	8-10 सप्ताह	0.5 मिली.	मांसपेशी में

परजीवी रोग

कुछ बाह्य परजीवी जैसे किलनी, जुँए आदि मुर्गियों के पंख या चमड़ी में पाये जाते हैं तथा पक्षियों का खून चूस कर संकमित करते हैं जिसके कारण मुर्गी के शरीर में खुजली होती है, तथा अण्डा उत्पादन घट जाता है। मुर्गियों को इन परजीवियों से बचाने के लिए मुर्गी आवास का साफ-सुथरा होना आवश्यक है। परजीवियों की संख्या अधिक होने पर 2 मिली0 मैलाथियान/सामाथियान/नुभान/एक्टोमीन आदि कीटनाशक दवाओं को 10 लीटर पानी में मिलाकर मुर्गियों पर तथाउनके आवास में छिड़काव करना चाहिए। इन कीटनाशक दवाइयाकें को मुर्गियों के दाने-पानी से दूर रखना चाहिए। इस दवा के प्रयोग के बाद मल्टीविटामिन को पानी में मिलाकर पिलाना चाहिए।

अन्तः परजीवी बीमारीयाँ

अन्तः परजीवी मुर्गियों के अन्दर जैसे आहारनाल, श्वासनली व ऑंख में पायो जाते हैं। इनके द्वारा हो वाली बीमारियाँ निम्न प्रकार हैं।

१. गोलकृमि - यह कृमि आंतों में पाया जाता है। इसके कारण मुर्गी कमजोर हो जाती है। तथा रक्तहीनता के लक्षण दिखाई देते हैं । अण्डा उत्पादन कम हो जाता है, कृमियों की संख्या अधिक होने पर आंतों में गांठ बन जाती है जिसके कारण मुर्गियों की मृत्यु भी हो सकती है।

उपचार - मुर्गियों को विपराजिन, लिभामीजल आदि दवाओं का घोल एक बार पिलाना चाहिए।

२. फीताकृमि - बाहर घूम-घूमकर खाने वाले पक्षियों में ज्यादातर पाया जाता है। यह कृमि मध्यवर्ती प्राणी जैसे मक्खी, चींटी, घोंघा, केंचुआ आदि की सहायता से अपना जीवन चक्र पूरा करता है। जब मुर्गी इस मध्यवर्ती प्राणी को अपना आहार बनाती है तब यह कृमि उसके शरीर में चला जाता है। इसके कारण मुर्गियों में कमजोरी, रक्तहीनता व अण्डा उत्पादन में कमी जैसे लक्षण दिखते हैं ।

उपचार - पशु चिकित्सक की सलाह पर अल्वेन्डाजोल नामक दवा को पानी या आहार में मिलाकर दिया जाना चाहिए।

खूनी पेचिस

इसको कॉक्सीडियोसिस भी कहते हैं । यह बीमारी ज्यादातर 3-12 सप्ताह की

उम्र के पक्षियों में होती है। प्रभोंवित मुर्गियाँ सिर को नीचे करके कमरे के एक कोने में दूसरी मुर्गियों से दूर खड़ी रहती है, पंख ढीले हो जाते हैं तथा खूनी पेचिस होती है। कुछ घंटों के बाद बीमार मुर्गियों की मृत्यु हो जाती है।

उपचार -बीमार मुर्गियों को डाक्टर की सलाह पर एम्प्रोसल, एम्प्रोलियम, सल्फाक्यूनीजॉलीन नामक दवाई को पानी में मिलाकर 3-5 दिन तक पिलाना चाहिए। रोकथाम के लिए आवास की बिछावन को सदैव सूखा रखना चाहिए और दाने में सेलाइनोमाइसिन, मेडुटामाइसिन आदि कॉक्सीडियोस्टेट मिलाकर नियमित रूप से खिलाना चाहिए।

फफूंदी जनित रोग

कुक्कुट में फफूंदी मुर्गियों की बिछावन व राशन में प्रयोग होने वाली खली के जरिए शारीर में प्रवेश करती दहै। कुछ फफूंदी मुर्गियों के राशन में अपने विष छोड़ देती है। इस विषाक्त राशन को खाने पर मुर्गियाँ बीमार हो जाती है जिसके कारण उनका वजन कम हो जाता है, अण्डे की पैदावार घट जाती है तथा प्रभावित मुर्गियाँ मर जाती हैं।

उपचार - इससे बचने के लिए मुर्गियों को फफूंद रहित दाना खिलाना चाहिए। दाने में एल्युमिनियम सिलिकेट मिलाने से विष की तीव्रता कम हो जाती है। प्रभावित मुर्गियों को मल्टीविटामिन, लिव- 52, ब्रोटोन आदि दवाईयाँ पानी में मिलाकर देनी चाहिए। राशन में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाने पर विष का प्रभाव किसी हद तक कम किया जा सकता है।

ब्रूडर निमोनिया

यह बीमारी चूजों में 10 दिन तक की उम्र में पायी जाती है। इसके कारण सांस लेने में कठिनाई होती है तथा चूजे मुंह खोलकर सांस लेते हैं । ब्रूडर के नीचे खड़े रहते हैं, पंख ढीले हो जाते हैं, नाक से पानी निकलता है तथा 10-20 चूजे मर जाते हैं ।

वयस्क मुर्गियाँ भी फफूंदी रोग से प्रभावित होती है जिसके कारण सांस की बीमारी हो सकती है। छीकना, मुंह खोलकर सांस लेना, अण्डा उत्पादन कम हो जाना तथा नाक से पानी आना मुख्य लक्षण है। 5-10 प्रतिशत मुर्गियाँ मर जाती है।

उपचार - प्रभावित मुर्गियों को एक ग्राम नीला थोथा (कॉपर सल्फेट) 2 लीटर पानी में मिलाकर एक दिन के अंतराल पर 3-5 बार देना चाहिए। जैव सुरक्षा की दृष्टि से प्रयोग होने वाली बिछावन व अन्य उपकरण को फार्मेलिन के द्वारा उपचारित करना चाहिए।

विटामिन व खनिज तत्वों की कमी से होने वाली बीमारियाँ

संतुलित आहार मुर्गियों की विटामिन्स तथा खनिज तत्वों की आवश्यकता पूर्ति

करता है। तथापि इन तत्वों अथवा विटामिन्स की कमी से होने वाली बीमारियाँ व उनके निदान निम्न प्रकार हैं।

विटामिन	कमी के लक्षण	उपचार
विटामिन-ए	शारीरिक कमजारी, विकास में रूकावट, अण्डा उत्पादन में कमी, आंखों से पानी आना व कीचड़ जमना, रोग प्रतिरोधक क्षमता का घटना या कम होना मुख्य लक्षण हैं।	फॉमीटोन, विमरॉल आदि दवाओं का घोल या मुर्गी राशन में हाइब्लेन्ड मिलाकर देना चाहिए।
बी-काम्प्लेक्स	भूख में कमी, पैरों में लकवा, पाचन शक्ति में कमी, अण्डा उत्पादन में कमी, पैर की अंगूलियों का अन्दर की ओर मुड़ जाना तथा लंगड़ा कर चलना मुख्य लक्षण हैं । इसके अलावा त्वचा में खुजली होना, चोंच के किनारों में घाव होना तथा पंख टूट जाना भी शामिल है।	मुर्गियों को दाने या पानी में ग्रोबीप्लेक्स, माइसल-बी आदि दवाइयाँ देना चाहिए।
विटामिन-डी	रिकेट्स या ऑस्टियोमलेशिया नामक बीमारी होती है, पांव की हड्डी कमजोर हो जाती है, लंगड़ापन, गांठों में सूजन आती है, अण्डा उत्पादन घट जाता है तथा मुर्गी पतले छिलके वाले अण्डे देती है।	राशन में डिसीरल व हाइब्लेन्ड नामक दवाइयाँ दी जाती है।
विटामिन-ई	मुर्गियों के प्रजनन अंगों के विकास में बाधा उत्पन्न होती है जिस कारण मुर्गी देर से अण्डा देना शुरू करती है। मुर्गियों की गर्दन पीछे की ओर घूम जाती है तथा मुर्गी को लकवा हो जाता है।	पानी में फॉमीटोन, विमरॉल या ई-केयर-से नामक दवाईयाँ दी जाती हैं। राशन में हाइब्लेन्ड मिलाकर खिलाया जाता है।
विटामिन-के	शरीर के अन्दर रक्तस्राव होता है जिसके कारण मुर्गी मर सकती है।	दाने में हाईब्लेन्ड मिलाकर खिलाना चाहिए।

खनिज तत्व	कमी के लक्षण	उपचार
कैल्शियम एवं फास्फोरस	कमी के कारण रिकेट्स व ऑस्टियोमलेशिया नामक बीमारी होती है, हड्डियाँ कमजोर हो जाती है, मुर्गी लंगड़ाकर चलती है, अण्डे का छिलका कमजोर तथा उत्पादन घट जाता है।	मुर्गी राशन में आई.एस.आई. मुहर मुर्गीयुक्त खनिज मिश्रण प्रयोग करना चाहिए। पानी में ऑस्टियो-, करना न्युट्रीकल, मेरीकल, कैल्सीरॉल आदि दवाईयाँ दी जाती है।
मैंगनीज	इसके कारण स्लिप टेन्डन नामक बीमारी होती है। जिसके कारण पांव मुड़ जाते हैं, मुर्गियों को खड़े होने में परेशानी होती है, अण्डा उत्पादन घट जाता	मुर्गी राशन में खनिज तत्वों का मिश्रण मिलाना चाहिए तथा पानी में जीप्रोमीन नामक दवा देनी चाहिए।

	है अन्ततः मुर्गी मर जाती है।	
पोटेशियम	मांस पेशियों में कमजोरी, दिल का दौरा पड़ना, सांस लेने में कठिनाई तथा आकस्मिक मृत्यु इसके मुख्य लक्षण हैं ।	- उक्त -
आयोडीन	घेंघा रोग होता है तथा शारीरिक वृद्धि रूक जाती है।	- उक्त -
लोहा व तांबा	मुर्गियाँ रक्तहीनता की शिकार हो जाती है, फलस्वरूप कमजोर हो जाती है।	- उक्त -
जिंक (जस्ता)	शारीरिक विकास रूक जाता है, पंखों का गिरना तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी, हड्डियों के जड़ों में सूजन आना मुख्य लक्षण है।	- उक्त -

मुर्गियों को बीमारी से बचने हेतु ध्यान देने योग्य बातें

1. स्वस्थ मुर्गियों को बीमार व मरी हुई मुर्गियों से दूर रखना चाहिए।
2. मुर्गी आवास व उसमें प्रयोग होने वाले उपकरण जैसे दाने व पानी के बर्तन तथा बिछावन आदि को साफ रखना चाहिये एवं इसमें समय-समय पर जीवाणुनाशक दवा का छिड़काव करना चाहिये।
3. मुर्गियों को समय-समय पर दाने या पानी में एन्टीयोटिक्स, विटामिन्स व खनिज लवण देने पर उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई जा सकती है।
4. मुर्गियों को प्रमुख बीमारियों से बचाने के लिये उचित आयु पर टीकाकरण करना आवश्यक है।
5. अण्डा देने वाली मुर्गियों को महनी में एक बार कृमियों से बचाव के लिये दवाई अवश्य दें।
6. मरी हुई मुर्गी, मुर्गियों के मलमूत्र, गिरे हुए पंख व टूटे हुये अण्डे आदि को मुर्गी आवास से दूर सुरक्षित स्थान पर दफना या जला देना चाहिये।
7. मुर्गियों को दूसरे वन्य पक्षी व जानवर आदि से दूर रखना चाहिये ।
8. मुर्गियों के स्वास्थ्य की जांच पशु चिकित्सक द्वारा समय-समय पर करानी चाहिए।

बर्ड फ्लू (एवियन इन्फ्लूएंजा) के सम्बन्ध में आवश्यक तथ्य एवं जानकारी

इससे डरे नहीं सावधानियाँ बरतें

मुर्गी पालने वाले तथा मुर्गी व्यवसाय से जुड़े अन्य लोग विशेष रूप से ध्यान दें कि

बीमार मुर्गियों के सीधे सम्पर्क में न आयें।

दस्ताने या किसी भी अन्य सुरक्षा साधन का इस्तेमाल करें।

बीमार पक्षियों के पंख, श्लेष्मा (म्यूकस) और बीट को न छुयें।

छुये जाने की स्थिति में साबुन से तुरंत अच्छे तरीके से हाथ धौयें।

मुर्गियों को बाड़े में रखें।

संक्रमित पक्षियों को मार कर उनका सुरक्षित निपटान करें।

बीमार अथवा मरे हुए पक्षी की सूचना निकटतम पशु चिकित्सा संस्था को तुरंत दें। ऐसा करना जन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

सामान्य जानकारी

बर्ड फ्लू मुख्यतः मुर्गियों का बड़ा ही संक्रामक रोग है।

संक्रमित पक्षी के सम्पर्क में आने से यह संक्रमण मनुष्यों में फैल सकता है।

बर्ड फ्लू के वायरस ने एशिया, अफ्रीका और यूरोप के कई देशों में मुर्गी पालन व्यवसाय को नुकसान पहुँचाया है।

यह अत्यन्त संक्रामक वायरस जनित रोग है। जिसके कारण मुर्गी पालन व्यवसाय को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

मनुष्य खासकर बच्चे, अगर बीमार पक्षी की (म्यूकस) बीट और पंखों के सम्पर्क में आ जायें तो उनमें संक्रमण फैल सकता है।

मनुष्यों में बर्ड फ्लू के लक्षण साधारण फ्लू से मिलते-जुलते हैं। जैसे कि साँस लेने में तकलीफ, तेज बुखार, जुकाम और नाक बहना, ऐसी

शिकायत होने पर नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र को तुरंत इसकी सूचना दें।

सामान्यतः बर्ड फ्लू का वायरस 70°C तापमान पर नष्ट हो जाता है।

किसी स्थान पर बर्ड फ्लू रोग की पुष्टि होने पर भी अण्डे व चिकन 70°Cतापमान पर पकाकर खाने में कोई नुकसान नहीं हैं।

मुर्गे-मुर्गियों के संक्रामक रोगों से बचाव के लिए सोने-से खरे कुछ उपाय

पक्षियों को रानीखेत गम्बोरो और बर्ड फ्लू जैसी कई बीमारियां हो सकती है। ये बीमारियां एक पक्षी से दुसरी पक्षी में व दूषित पानी से अथवा प्रभावित पक्षी के मल-मूत्र, पंखों आदि के जरिये पूरे झुंड को तेजी से प्रभावित कर सकती है। मुर्गी पालन से जुड़े होने के नाते आप अच्छी तरह जानते हैं कि अपने पक्षियों को इन बीमारियों से बचाना कितना महत्त्वपूर्ण है?

आइये अपने पक्षियों के साथ-साथ अपने बचाव के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाएं-

1. बाड़े में सुरक्षित रखें-

अपने पक्षियों को बाड़े में रखिये, केवल आपकी पौल्ट्री फार्म की देखभाल करने

वालों को ही पक्षियों के पास जाना चाहिए। अनावश्यक लोगों को बाड़े में प्रवेश न करने दें। अपने मुर्गे-मुर्गी को दूसरे पक्षियों/पशुओं के सम्पर्क में न आने दें। दो प्रजातियों के पक्षियों को एक ही बाड़े में न रखें।

2. साफ-सफाई रखें।

पक्षियों के बाड़े में और उसके आसपास साफ-सफाई बहुत जरूरी है। इस प्रकार जीवाणु और विषाणुओं से बचा जा सकता है, पक्षियों के बाड़ों को साफ-सुथरा रखें। अपने पौल्ट्री फार्म/बाड़े को नियमित रूप से चूने अथवा कीटाणुनाशक दवाओं को छिड़काव कर संक्रमण मुक्त करते रहें।

3. आहार एवं पेयजल व्यवस्था -

पक्षियों को स्वस्छ एवं शीतल पेयजल और संतुलित आहार देवें। पक्षियों का भोजन एवं पेयजल रोजाना बदलें व पेयजल और भोजन के बत्तनों की नियमित साफ-सफाई करें।

4. अपने पौल्ट्री फार्म में बीमारियों को प्रवेश करने से रोकें:-

अपने आपको और बाजार या अन्य फार्मों में अन्य पक्षियों के संपर्क में आने वाली हर चीज की साफ-सफाई रखें। नये पक्षी कम-से-कम 30 दिनों तक अपने स्वस्थ पक्षियों से दूर रखें। बीमारी को फैलने से रोकने या बचाव के लिए पौल्ट्री के संपर्क में आने से पहले और बाद में अपने हाथ, कपड़ों और जूतों को धोयें तथा संक्रमण मुक्त करें।

5. बीमारी उधार न लें

यदि आप अन्य फार्मों से उपकरण या पक्षी लेते हैं तो अपने स्वस्थ पक्षियों के संपर्क में आने से पहले भली भांति उनकी सफाई करें और संक्रमण मुक्त करें। अनावश्यक लोगों व अन्य फार्म पर कार्यरत मजदूरों एवं वाहनों को अपने फार्म पर प्रवेश न दें।

6. लक्षणों को पहचानें -

अपने पक्षियों पर नजर रखें, यदि पक्षियों की आंख, गर्दन और सिर के आस-पास सूजन है और आँखों से रिसाव हो रहा है, कलनी और टांगों में नीलापन आ रहा है, अचानक कमजोरी, पंख गिरना बढ़ रहा है और पक्षियों की हरकत में कमी आ रही है, पक्षी आहार कम ले रहे हैं व अण्डे भी कम दे रहे हैं और असामान्य रूप से अधिक पक्षी मर रहे हैं, तो यह सब खतरे के संकेत हैं। यदि पक्षियों में ऐसे असामन्य लक्षण दिखाई देते है तो इसे छुपायें नहीं क्योकि यह आपके परिवार के स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक हो सकता है।

7. बीमार पक्षी की सूचना -

अपने पक्षियों की हर असामान्य बीमारी अथवा मौत की सूचना तुरंत निकटतम पशु चिकित्सा संस्था व जिले के उपसंचालक पशु चिकित्सक सेवाएं को तत्काल दें।

मुर्गीपालकों के लिए ध्यान देने योग्य बातें

1. ब्रायलर उत्पादन हेतु अच्छी नस्ल के चूजे प्रतिष्ठित हैचरी अथवा स्रोत से लेने चाहिए।
2. ब्रूडर हाउस ऊँचे व सूखे स्थान पर बनायें।
3. ब्रूडर हाउस हवादार होने चाहिए तथा ताप नियंत्रण सुचारू होना चाहिए।
4. लिटर सूखा एवं स्वच्छ रहे तथा कभी-कभी लिटर को स्क्रेपर अथवा खुरपी के सहायता से हिलाते रहना चाहिए।
5. दाना व पानी स्वच्छ एवं ताजा दें। दाना अच्छे प्रकार का होना चाहिए।
6. प्रति मुर्गी पर्याप्त भूमि उपलब्ध करायें। चूजों को कभी भी सघन न होने दें।
7. नियमित निरीक्षण, उपचार एवं मृत चूजों का निष्कासन तथा शव विच्छेदन आदि कराना चाहिए।
8. सारे चूजे एक साथ अन्दर व एक साथ बाहर प्रणाली रोग नियंत्रण में अत्याधिक प्रभावी है अतः इसे अपनाएं।

कुछ अन्य विशेष ध्यान देने योग्य बातें जो कि ब्रायलर उत्पादन को प्रभावित करती है तथा कृषक के लाभ को भी प्रभावित करती है, निम्न प्रकार हैं :-

1. कुक्कुट आहार की ऊँची कीमत एवं मिलावटी अथवा निम्नस्तरीय दाना।
2. अच्छी नस्ल के चूजों की अनुपलब्धता तथा बिचौलियों द्वारा अच्छी नस्ल के साथ खराब चूजों की मिलावट।
3. अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल।
4. ब्रायलर तथा ब्रायलर उत्पादों की मांग में उतार चढ़ाव/अनिश्चित विपणन।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए सदैव प्रयास करना चाहिए कि इन कारणों से होने वाली हानि को रोकने के उपाय किये जायें तथा आवश्यकता पड़ने पर समीपस्थ विशेषज्ञों की राय ले ली जाये।

पशुपालन सुख का साधन

पशुपालन सूचना एवं प्रसार, बिहार, ऑफ पोलो रोड, पटना-1

द्वारा जनहित में प्रकाशित फोन 0612-2225872

वर्ष-2014, मुद्रण 2000 प्रति